श्री श्रेयांसनाथ जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

हे श्रेयनाथ मेरे भगवन्! मैं श्रेय पंथ पाने आया।
मैं चला अभी तक मोह पंथ, भगवंत संत को ना पाया।।
निज रूप नहीं जाना मैंने, कैसे वसु द्रव् सजाऊँ मैं।
श्रद्धा का थाल लिया कर मैं, हे स्वामी तुम्हें पुकारूँ मैं।।
मैंने मन आँगन स्वच्छ किया, विश्वास प्रभु जी आयेंगे।
प्रभु काल अनादि से सोये, बालक को आज जगायेंगे।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(तर्ज–हे दीनबंधु)

उत्तम क्षमा का जल नहीं, पिया मेरे प्रभु।
कषायों की कलुषता मिटी नहीं प्रभो।।
जन्मादि रोग नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण ।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

शीतल सुगंध द्रव्य लेप भी किया प्रभो।
निज आत्मा का ताप भी मिटा नहीं प्रभो।।
राग ताप नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

संयोग औ वियोग का ये सिलसिला रहा।
उत्पन्न जो हुआ उसी का नाश भी हुआ।।
गुण अखंड पाने हेतु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धा बिना ही धर्म को करता रहा प्रभो।
निज ब्रह्म रूप को नहीं लखा मेरे प्रभो।।
काम बाण नाशने को आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।..4।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तृष्णा महाभयंकरी है नागिनी प्रभो।
निज ज्ञान नागदमनी से बचाइये प्रभो।।
तृष्णा का रोग नाशने को आ गया शरण।।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।..5।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोहांधकार का विनाश कीजिये प्रभो।
दैदीप्यमान पूर्णज्ञान दीजिये प्रभो।।
ज्ञान दीप्ति पाने हेतु आ गया शरण।।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
मैं पाप कर्म का विनाश कर नहीं सका।
चिर काल से थका हुआ था आप दर रुका।।
अष्ट कर्म नाश हेतु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
मैं पाप और पुण्य के फलों में लिप्त था।
बोया बबूल और आम चाहता रहा।।
मोक्ष फल की भावना से आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।..8।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
स्वानुभूति दिव्य अर्घ्य आपके समीप हैं।
क्या चढ़ाऊँ नाथ अर्घ्य आपको विदित है।।
थ्सद्ध पद के हेतु प्रभु आ गया शरण।
हे श्रेयनाथ दूर कीजिये जनम मरण।।..9।।
ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

माता विमला गर्भ पधारे, पुष्पोत्तर से कमन किया।
ज्येष्ठ वदी मावस को सारे, देव लोक ने नमन किया।।
सिंहपुरी में पिता विमल के, गृह में जय-जयकार किया।
मात गर्म में प्रभुवर राजे, किञ्चित् भी नहीं कष्ट दिया।।।1।।
ॐ हीं ज्येष्ठकृष्णाअमावस्यायां गर्भमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन वदी ग्यारस को जन्मे, देवासन भी कांप उठे।
शचि कहे जिनवर से स्वामी, मेरा जन्म मरण छूटे।।
शीतल मंद सुगंधित वायु, बहती है हौले-हौले।
क्षीरोदधि का क्षीर नीर ले, देव सभी जय-जय बोले।2।।
ॐ हीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
रूकी बहारें ऋतु बसंत की, देख प्रभु वैराग्य धरा।
फाल्गुन कृष्णा ग्यारस के दिन, श्रवण ऋक्ष में तप धारा।।
विमलप्रभा पालकी मनोकर, वन पहुँची सुर नर के साथ्।
किये तीन उपवास साथ में, एक हजार हुए मुनिनाथ।।3।।
ॐ हीं फाल्गुनकृष्णएकादश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्रायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
माघ वदी मावस अपराह्ने, पूर्णज्ञान का सूर्य उगा।
पंच सहस धनु उन्नत नभ में, समवसरण की लगी सभा।।
दिव्यध्वनि से श्री जिनवर ने, जीवों का उद्धार किया।
जय श्रेयांसनाथ तीर्थंकर, देवों ने गुणगान किया।।4।।
ॐ हीं माघकृष्णाअमावस्यायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
सावन के महिने में शीतल, पूर्ण चंद्र का उदय हुआ।
सम्मेदाचल संकुल कूट से, जिन श्रेयांस को मोक्ष हुआ।।
एक सहस मुनि साथ पधारे, शिवलक्ष्मी भी धन्य हुई।
मोक्ष कल्याणक महिमा मेरे, पुण्योदय से गम्य हुई।।।5।।
ॐ हीं श्रावणशुक्लपूर्णिमायां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ऊँ हीं अर्हं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

श्री श्रेयांश जिनेश को, नमन करूँ शत बार।
मात्र आप आधार हैं, देख लिया संसार।।1।।
जय श्रेयनाथ आप श्रेयपंथ दिखाते।
संसारी जीव आप पाद पद्म में आते।।
हे विश्व वंद्य श्रेयनाथ अर्चना करें।
हो आपको नमोस्तु नाथ वंदना करें।।2।।
जो भव्य जीव आप तीर्थ स्नान करें हैं।
वे अष्ट कर्म मल समूह नष्ट करें हैं।।3।।
हैं ग्यारवें तीर्थंकरा श्रेयांस जिनवर।
प्रभु आप में रहे नहीं अब दोष अठारा।।4।।
हे नाथ जग प्रकाश एक रूप आप ही।
उपयोग नंत ज्ञान दर्श दोय रूप भी।।5।।
जिन दर्श ज्ञान वृत्त से त्रिरूप हो तुम्हीं।
आर्हन्त्य के अनंत चतुष्टय स्वरूप भी।।6।।
पंच परम इष्ट ब्रह्म पंच रूप हो।
जीवादि द्रव्य जानते तुम षट् स्वरूप हो।। 7।।
सातो नयों की देशना दी सात रूप हो।
आठों गुणो से युक्त सिद्ध आठ रूप हो।।8।।
क्षायिकी नव लब्धियों से नव स्वरूप हो।
दश धर्म के धारी जिनेश दश स्वरूप हो।।9।।
ग्यारह प्रतिमाओ का उपदेश दे दिया।
भक्तों ने ग्यारवें जिनेश को नमन किया।।10।।
जिनराज दिव्यदेशना सौभाग्य से मिली।
पावनघड़ी है आज हृदय की कली खिली ।।11।।
कोई नहीं जिनेश है इस जग में हमारा।
चारों गति में देख लिया तू ही सहारा।।12।।

दोहा

अगणितगुण गण के धनी, मुक्तिरमा के नाथ।
मेरा भी कल्याण हो, हूँ त्रियोग नत माथ।।13।।

ऊँ हीं श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री श्रेयांस जिनेश्वर, श्री परमेश्वर, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।